Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- VIII | ISSUE- I | JANUARY | 2021 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.149 | ISSN 2349-638x

बीकानेर के शासक महाराजा गजसिंह का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध : एक अध्ययन

मरियम बानो
पी—एच.डी. शोधार्थी
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय,
झुन्झूनुं (राजस्थान)

डॉ. तपेन्द्र सिंह शेखावत
शोध निदेशक
सहायक—आचार्य, इतिहास विभाग
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय,
झुन्झूनुं (राजस्थान)

सारांश

बीकानेर रियासत का तकरीबन ५०० वर्षों तक केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध रहा है। दिल्ली दरबार के शासकों की नीतियों, व्यवहार, साम्राज्य विस्तार, राजनैतिक उठापटक, राजस्व नीति, विद्रोह इत्यादि का समय—समय पर बीकानेर रियासत के साथ सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ा। उपर्युक्त नीतियों के कारण कभी सम्बन्ध सामान्य रहे, तो कभी सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हुआ तो कभी सम्बन्ध मजबूत सिद्ध होकर राज्य के सम्पूर्ण विकास में सहायक सिद्ध हुए।

मूल शब्द : *सम्बन्ध, राज्य, सत्ता, विकास, दरबार आदि।*

प्रस्तावना :

राव कल्याणमल ने दिल्ली दरबार से जो मधुर सम्बन्धों की शुरूआत की वो दिनोंदिन बढ़ती गई। यह मधुर सम्बन्ध सिर्फ बीकानेर रियासत के शासकों की ही जरूरत नहीं थे बल्कि दोनों ने ही एक—दूसरे की आवश्यकता समझी। मुगल भी इस बात से भलीभांति परिचित थे कि राजपूतों के मुकाबले अन्य जाति में इतनी स्वामीभक्त नहीं हो सकती। जो राजपूताने के राजपूतों की तलवार में दम था वो अन्य किसी भी योद्धा में न था। इनकी स्वामीभक्ति व तलवार में दम के कारण इनका मान—सम्मान दिल्ली दरबार में बढ़ने लगा। बीकानेर के शासक उच्च व जिम्मेदार पदों पर रहते हुए, दक्षिण तक के अभियानों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करते हुए अपनी वीरता व स्वामीभक्ति का परिचय दिया। मुगल सत्ता द्वारा समय—समय पर इनका **मनसब** व **ओहदा** बढ़ाया गया। जिसके कारण बीकानेरी सेना को अपने राज्य के विद्रोह व अन्य राज्यों में राजनैतिक मध्यस्थता करने का पूर्ण मौका मिला। जिसके सुखद व दूरगामी परिणाम निकले। **बादशाह अकबर, जहांगीर व शाहजहां** के समय मधुर सम्बन्ध अपनी पराकाष्ठा पर थे जिसके परिणामस्वरूप बीकानेर क्षेत्र का राजनैतिक व सांस्कृतिक का चहुंमुखी विकास हुआ।

धीरे—धीरे औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के कारण मुगल सत्ता पतन की तरफ बढ़ने लगी। जो राजपूत स्वामीभक्ति के कारण मुगलों के लिए तलवार बने थे वे भी धीरे—धीरे दूर होने लगे। केन्द्रीय सत्ता को चारों तरफ से विद्रोहियों ने घेर लिया था। ऐसे में औरंगजेब की मृत्यु के बाद एक भी कुशल शासक दिल्ली दरबार की गद्दी पर नहीं बैठा जो तत्कालीन व्यवस्था में सुधार व स्थायित्व प्रदान कर सके। जिसका परिणाम यह हुआ कि अब रियासतों से भी सम्बन्ध टूटने लगे।

महाराजा गजसिंह (१७४६ ई. से १७८७ ई.) :

गजसिंह को राजगद्दी प्राप्त होना :

महाराजा जोरावरसिंह की नि:संतान मृत्यु हो गई। उत्तराधिकार के प्रश्न पर काफी विवाद था। राजगद्दी के दो दावेदार थे — (१) अमरसिंह (२) गजसिंह। दोनों ही महाराजा जोरावरसिंह के छोटे भाई अभयसिंह के पुत्र थे। बीकानेर का प्रशासन ठाकुर कुशलसिंह (भुकरका) और बख्तारसिंह मेहता

के हाथों में था। जोधपुर शासक अभयसिंह ने मौका पाते ही बीकानेर पर चढ़ाई कर दी। गजसिंह, ठाकुर कुशलसिंह व बख्तारसिंह के योग्य नेतृत्व व युद्ध कौशल से उपद्रव के वातावरण को शांत किया गया। मेहता व ठाकुर के सहयोग से गजसिंह को बीकानेर की राजगद्दी सितम्बर, १७४६ ई. को प्राप्त हुई। अमरसिंह नाराज होकर बीकानेर छोड़ कर अन्यत्र चले गए।

महाराजा गजसिंह (१७४५—८७ ई.)

बीकानेर पर अमरसिंह की चढ़ाई :

बीकानेर की राजगद्दी नहीं मिलने के कारण अमरसिंह नाराज था। अमरसिंह बीकानेर के विद्रोही सरदारों को एकत्रित करके जोधपुर शासक अभयसिंह से जा मिला। विद्रोही सरदारों ने अमरसिंह को गद्दी पर बैठाने का निश्चय किया। अभयसिंह की सेना के सहयोग से अमरसिंह ने १७४७ ई. को बीकानेर पर धावा बोल दिया। महाराजा गजसिंह ने सफलतापूर्वक इस आक्रमण को विफल किया और जोधपुर सेना को पीछे हटना पड़ा।

बख्तसिंह व अभयसिंह में वैमनस्य व मुगल, मराठा सहयोग :

लगातार बख्तसिंह व अभयसिंह में तनाव उत्पन्न हो रहा था। बख्तसिंह हर हाल में जोधपुर का शासक बनना चाहता था। बख्तसिंह ने सबसे पहले इस कार्य में **बीकानेर** (गजसिंह) के सहयोग की आवश्यकता समझी और अपने **विश्वासपात्र शिवदान पड़िहार** को बीकानेर भेजा जिसने **बख्तावरसिंह मेहता** से मिलकर महाराजा गजसिंह के सहयोग का पूर्ण वचन लिया। **मुगल बादशाह** की ओर से **बख्तसिंह ने पठानों से युद्ध** किया व उन्हें हराकर बादशाह के सामने अपनी योग्यता का परिचय दिया। बख्तसिंह जोधपुर पर आक्रमण के लिए मुगल बादशाह से **विशाल सेना** का सहयोग लेकर सांभर तक आ गया। महाराजा गजसिंह को भी वहाँ बुलवाया गया। इस घटनाक्रम को जोधपुर शासक अभयसिंह को पता लगा तो उसने मराठा सरदार **मल्हारराव होल्कर** को अपने सहयोग के लिए बुलाया। बख्तसिंह ने गजसिंह के सहयोग के लिए कहा — "आपके आने से एक और एक दो नहीं हुए हैं बल्कि एक और एक ग्यारह हो गए हैं।" कहने का मतलब है कि हमारी शक्ति अत्यन्त बढ़ गई है। अभयसिंह व बख्तसिंह दोनों ही एक—दूसरे पर आक्रमण को आतुर थे। इसी समय ईश्वरीसिंह (जयपुर शासक) ने अपने एक दूत को भेजा जिसने मल्हारराव होल्कर व बख्तसिंह से बात की। मल्हारराव के सहयोग से दोनों भाइयों में सुलह हुई। कुछ समय के लिए युद्ध टल गया।

बख्तसिंह को जोधपुर की राजगद्दी मिलना :

बख्तसिंह व जोधपुर के शासक के बीच लगातार टकराव का वातावरण बना रहता था। ऐसे समय में अभयसिंह की मृत्यु के बाद **रामसिंह** जोधपुर का शासक बना जो अपनी प्रजा व सरदारों में अप्रिय था। उधर जयपुर शासक **ईश्वरसिंह** जो रामसिंह के सहयोगी थे उनकी मृत्यु हो गई। जोधपुर सरदारों द्वारा लगातार बख्तसिंह से निवेदन करना व लगातार राजनैतिक स्थिति का बदलना, अत: १७५१ ई. में बख्तसिंह ने महाराजा गजसिंह के सहयोग से जोधपुर की गद्दी प्राप्त की। बख्तसिंह ने महाराजा के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि — "आपके सहयोग के बिना यह सम्भव नहीं था।"

बख्तसिंह की मृत्यु :

२६ अगस्त, १७५२ ई. (वि.सं. १८०९ भाद्रपद वदि १३) को बख्तसिंह का देहांत अजमेर के पास **सोनौली** में हो गया। बख्तसिंह का पुत्र विजयसिंह जोधपुर का शासक बना।

मुगल बादशाह द्वारा हिसार का परगना गजसिंह को भेंट करना :

मुगल दरबार की शक्ति में लगातार कमी होती जा रही थी। अपने दूर के परगनों को सुरक्षित रखना बादशाह के लिए असम्भव था क्योंकि जागीरदार विद्रोह को तैयार रहते थे। हिसार का परगना दिल्ली दरबार से काफी दूर था। **अहमदशाह** ने उसकी सुचारू व्यवस्था व विद्रोह को शांत करने के लिए हिसार का परगना महाराजा गजसिंह को प्रदान किया। गजसिंह ने १९ मई, १७५२ ई. को बख्तावरसिंह मेहता को अपना प्रशासक बनाकर वहाँ भेजा। महाराजा गजसिंह स्वयं कभी—भी दिल्ली दरबार में उपस्थित नहीं हुए परन्तु अपनी मित्रता निभाते हुए हमेशा सहयोग पूर्ण व्यवहार रखा। यह उसकी का फल था कि बादशाह के सामने महाराजा का काफी सम्मान था।

मुगल बादशाह द्वारा गजसिंह को मनसब प्रदान करना :

लगातार मुगल सत्ता की स्थिति कमजोर हो रही थी। अब स्थिति यह हो गई कि बाह्य व आंतरिक विद्रोह ही नहीं बल्कि दिल्ली दरबार में भी **बादशाह** का सम्मान घटने लगा था। बादशाह चारों तरफ से विद्रोहियों से घिर चुके थे। बादशाह अहमदशाह ने ऐसी स्थिति में महाराजा गजसिंह को एक सूचना भिजवाई कि **वजीर सफदरजंग** व **मन्सूर अली खां** विद्रोही हो गए हैं। इनसे अत्यन्त खतरा है। अत: जल्द सेना ले कर दिल्ली दरबार में आएं। गजसिंह ने तत्काल **बख्तावरसिंह मेहता** के नेतृत्व में सेना भेजी। बख्तावरसिंह बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और महाराजा की तरफ से सिक्के आदि भेंट पेश की। तुरंत सहायता से बादशाह अत्यन्त खुश हुआ। बादशाह ने महाराजा गजसिंह को **सात हजार जात** व **पाँच हजार सवार मनसब** पुरस्कार स्वरूप भेंट किया। साथ ही **श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाशिरोमणि श्री गजसिंह** की उपाधि प्रदान की।

गजसिंह को अपने नाम की मुद्रा टंकन का अधिकार प्रदान किया गया। इनकी मुद्रा गजशाही कहलाई। यह तत्कालीन समय का श्रेष्ठतम खिताब था। इससे पहले किसी भी बीकानेर शासक को केन्द्रीय सत्ता से इस प्रकार का सम्मान प्राप्त नहीं हुआ था। इसी समय बीकानेर महाराजा गजसिंह को **माही मरातिब** का सर्वश्रेष्ठ सम्मान मिला। यह सम्मान देशी राज्यों को मुगल सत्ता (केन्द्रीय सत्ता) द्वारा भेंट किया जाता था। यह सम्मान उपाधि अब शिलालेखों, आदेशों व अन्य कार्यों में उपयोग होने लगी।

बादशाह द्वारा इसी समय महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह को चार हजारी जात व दो हजार सवार का मनसब प्रदान किया गया तथा बख्तावरसिंह मेहता को "राव" की उपाधि प्रदान करते हुए चार हजार जात व एक हजार सवार का मनसब प्रदान किया गया। दूसरे सहयोगी सरदारों को भी बादशाह द्वारा सम्मान दिया गया जो मुख्य रूप से इस प्रकार है —

क्र.सं.	सरदार	ठिकाना
१.	सरदारसिंह	पारवा
२.	पेमासिंह	नीमा
३.	जोरावरसिंह	कुम्भाणा
४.	भोपतसिंह	वाय
५.	धीरतसिंह	चूरू
६.	विजयसिंह	चाहड़वास
७.	देवीसिंह	सांडवा
८.	दीपसिंह	कणवारी
९.	धीरतसिंह	सांडवा
१०.	जालिमसिंह	बीदासर
११.	सुखरूप	परावा

सिरसा में मुगल बादशाह :

आलमगीर द्वितीय दिल्ली का बादशाह बना। जब वह सिरसा आया तो उसके दरबार में वाय के ठाकुर दौलतसिंह व भादरा ठाकुर लालसिंह पहुँचे, महाराजा गजसिंह निमंत्रण पर भी सिरसा नहीं जा पाए क्योंकि बीकानेर के पास के क्षेत्रों में विद्रोह, सरदारों का विरोध व आंतरिक स्थिति का अनुकूल न होना। इसलिए सिरसा न जाने का निर्णय लिया। मुगल दरबार व बीकानेर रियासत की मित्रता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। महाराजा गजसिंह ने सदैव मुगल स्वामीभक्ति का पालन करते हुए विद्रोह नहीं किया और न ही विद्रोहियों का सहयोग किया। इसीलिए **महाराजा गजसिंह एक बार भी दिल्ली दरबार में उपस्थित नहीं हुए** फिर भी उन्हें सर्वश्रेष्ठ सम्मान से नवाजा गया।

निष्कर्ष :

मुगलों व बीकानेर के राठौड़ राजपूतों के बीच जो मधुर सम्बन्ध स्थापित हुए उसका कारण मुगल दरबार में आमेर के बाद बीकानेर राज्य का रूतबा था। बीकानेर रियासत के शासक लगातार पद, सम्मान, उच्च ओहदा मुगल सत्ता से प्राप्त करते रहे। बीकानेर रियासत के शासकों के इस सम्मान से इन्हें अपने सैनिक व राजनैतिक गुणों का प्रदर्शन करने का मौका मिला। सदैव अपने इन्हीं गुणों के कारण सम्मान के पात्र बने रहे।

मुगल साम्राज्य के इतिहास में बीकानेर रियासत के राठौड़ों का योगदान एक अध्याय के रूप में है। इन्होंने स्वयं को स्वामीभक्ति के लिए न्यौछावर किया व अपने तलवार के दम पर विशाल मुगल साम्राज्य के निर्माण में पूर्ण योगदान दिया। बीकानेर मुगल सम्बन्ध अकबर व राव कल्याणमल से शुरू होते हैं। इन सम्बन्धों के सुखद व दूरगामी परिणाम निकले जो मुगल सत्ता व राठौड़ शासकों के लिए अत्यन्त सार्थक सिद्ध हुए। दिल्ली दरबार में **जयपुर के बाद** बीकानेर के राठौड़ शासकों का **मनसब उच्च** था। मुगल बादशाह द्वारा जोधपुर के ११ वर्ष बाद ही बीकानेर रियासत के शासकों को **"राजा"** की उपाधि प्रदान की गई। महाराजा गजसिंह के समय देशी शासकों का सर्वश्रेष्ठ सम्मान **"माही मरातिब"** प्रदान किया गया। यह सम्मान सम्पूर्ण मुगलकाल में बीकानेर रियासत को **तीन बार** भेंट किया गया। **प्रथम श्रेणी** के शासकों को इस सम्मान से नवाजा जाता था जिससे बीकानेर राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ी।

संदर्भ :

१. गहलोत, जगदीशसिंह : मेवाड़ राज्य का केन्द्रीय शक्तियों से सम्बन्ध, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, १९६०
२. गुप्ता, बेनी : बीकानेर राज्य का इतिहास, जयपुर, १९९८ ई.
३. गुप्ता, मोहनलाल : बीकानेर सम्भाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, २००९
४. गुप्ता, हरीराम : बीकानेर नगर का स्वर्णिम इतिहास एवं विकास, कलासन प्रकाशन, बीकानेर, २०१६
५. जैन, एम.एस. : आधुनिक राजस्थान का इतिहास, जयपुर, १९८९ ई.
६. खत्री, दीनानाथ : बीकानेर राज्य का संक्षिप्त इतिहास, अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, १९७८
७. कोचर, एस. : बीकानेर राज्य का संक्षिप्त इतिहास, स्वदेश प्रकाशन, जोधपुर, १९९२
८. कुमारी राज्यश्री बीकानेर : बीकानेर के महाराजा, महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट, बीकानेर, २०१८
९. मिश्र, बलदेव प्रसाद : टॉडकृत बीकानेर राज्य का इतिहास, यूनीक ट्रेडर्स, जयपुर, १९९४
१०. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १ व २, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, २००७
११. सिंह, महाराजा करणी : बीकानेर राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध, बीकानेर आर्ट पब्लिशर्स प्रा.लि., बीकानेर, १९६८